International Journal of Education and Science Research
Review
Volume-7, Issue-3 June- 2020
E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

शिक्षा के विकास में श्रीमद्भगवद्गीता की भूमिका का संक्षिप्त मूल्यांकन

Abha Sharma[1], Dr.Suraksha Bansal[2]
[1]Research Scholar, [2]Supervisor
[1,2]Malwanchal University
Indore, Madhya Pradesh

सार

किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र के कुशल, ईमानदार, योग्य एवं कौशलपूर्ण नागरिकों के द्वारा होता है यदि राष्ट्र के सभी नागरिकों को उनकी रूची, क्षमता, योग्यता के अनुसार व्यवसाय मिलता है और व्यवसाय से संबन्धित कौशलों का विकास होता तो उनके कार्यों की उत्पादकता बढ़ती है। इससे उस राष्ट्र के सभी नागरिकों का जीवन स्तर उठता है। इसके लिए देश के सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में श्रीमद्भगवद्गीता की व्यवस्था करना आवश्यक है, तभी प्रत्येक व्यक्ति तथा समाज के लोग कौशलपूर्ण जीवन के साथ अपनी अभिवृति एवं अभिरूचि के अनुसार कार्य कर पायेगें जिससे समाज का संतुलित विकास होगा। इसके लिए प्रत्येक नागरिक को शिक्षा, व्यवसाय, जीवन प्रबन्ध, जीवन दर्शन, सामाजिक, सांस्कृतिक, मानोवैज्ञानिक रूप से कौशलपूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है जिससे वे शारीरिक, मानसिक, एवं संवेगात्मक रूप से खुद को सामर्थ्यवान एवं कार्य में कुशलता का प्रयोग करेगें। जिससे प्राचीन मूल्यों के प्रति आस्था का दृष्टिकोण विकसित होगा और वर्तमान समाज द्वारा निर्मित मूल्यों को अपना कर वर्तमान तथा प्राचीन मूल्यों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकेंगे। इसके लिए सामाजिक, दार्शनिक, शैक्षिक, व्यावसायिक रूप में अधिक से अधिक विकास करेंगे तथा समाज के साथ समायोजन करने की भावना एवं दृष्टिकोण का विकास कर पायेंगे।

प्रस्तावना

व्यक्तित्व विकास के लिए भौतिक विकास के साथ आध्यात्मिक विकास होना भी अति आवश्यक है। इसलिए श्रीमद्भगवद्गीता में विद्यमान कौशल विकास की उपयोगिता का अध्ययन किया जाना अति आवश्यक है। इससे कई महान शिक्षकों ने प्रेरणा ली। जो इस प्रकार है:–महात्मा गांधी: जब मुझे शंकायें घेरती हैं, निराशाएँ मेरा सामना करती हैं और मुझे आकाश–मण्डल पर कोई ज्योति की किरण दृष्टिगोचर नहीं होती, उस समय मैं गीता की ओर ध्यान देता हूं। उसमें कोई न कोई श्लोक मुझे शांतिदायक अवष्य मिल जाता है और घोर शोकाकुल अवस्था में मैं तुरन्त मुस्कराने लगता हूं। मेरा जीवन बाह्य–दुःखपूर्ण घटनाओं से पूर्ण है और यदि उनके प्रत्यक्ष एवं अमिट कोई चिन्ह मुझ पर नहीं रह गये हैं ता इसक श्रेय श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेशों का ही है।
डा0 राधाकृष्णन के अनुसार : भगवद्गीता जीवन के सर्वोच्च लक्ष्यों को हृदयंगम करने में सहायता देती है। श्री अरविन्द घोष के अनुसार : गीता ग्रन्थ आध्यात्मिक ग्रन्थ है यह मानव को उसके स्तर से ऊंचा उठाती है और मानव विपत्तियों में भी तुरन्त मुस्कराने लग जाता है।

स्वामी विवेकानन्द : विवेकानन्द ने गीता को अपने जीवन व्यवहार में उतारा था। पूर्व राष्ट्रपति डां0 अब्दुल कलाम भी गीता को प्रेरणा दायक ग्रन्थ मानते हैं। दरसल गीता जीवन के यर्थात् रहस्यों को सुलझाती है। इसमें सारे जीवन के रहस्य का सार छिपा है। श्रीमद्भगवद्गीता द्वापर युग में महाभारत के युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया ज्ञान है। शताब्दियां बीत जाने के बाद भी इसकी प्रासांगिकता और उपयोगिता वैसी की वैसी बनी हुई है। क्योंकि उस वक्त की समस्याएं और परिस्थियां हर युग में बनती आई हैं। आज के इस संघर्षमय जीवन में तो गीता की उपयोगिता और बढ़ गयी है। क्योंकि यह उलझनों से किंकर्तव्यविमूढ़ हो चुके मानव को जीवन जीने का सही रास्ता दिखलाती इस प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता में निहित तत्वों का वर्तमान में निर्देशन एवं परामर्श प्रणाली में उपयोगिता के सिद्धान्तों एवं आदर्शों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पालन किया जायेगा तो समाज में नैतिक, समानता एवं उच्च आदर्शो की स्थापना करने में सहायता मिलेगी। गीता में विद्यमान निर्देशन एवं परामर्श को व्यक्ति के पूर्ण विकास हेतु व्यवहारिक रूप दिया जायेगा तो सम्पूर्ण समाज में प्रत्येक व्यक्ति एक आदर्श एवं उत्तम नागरिक बनेगा। जिससे सम्पूर्ण विष्व में उत्पन्न हो रही सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, एवं मनोवैज्ञानिक समस्यायें स्वतः ही हल

हो जायेगीं।

कुट शब्दः शिक्षण कौशल प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की सबसे ज्यादा भूमिका होती है कहा जाता है कि शिक्षक समाज का दर्पण प्रतिबिम्ब होता है जैसा शिक्षक का आचार, विचार एवं व्यवहार होता है वैसे समाज के व्यक्ति उनका अनुकरण करते हैं। साथ ही शिक्षक को मानव शिल्पी कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। क्योकि वह पशु प्रवृति बालक को अपने ज्ञान एवं सूचनाओं से कुशल नागरिक बनाकर उसे अपनी रूचि के अनुसार कार्य करने हेतु प्रेरित करता है। आधुनिक शिक्षा में शिक्षण कार्य को कौशलपूर्ण बनाने हेतु विभिन्न तकनीकीयो का प्रयोग हार्डवियर एवं सोफटवियर का प्रयोग कर सम्पूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में शिक्षण कौशलों को सिखाया जाता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने समाज के पिछडे वंचित एवं गरीब लोगों को गरीबी रेखा से उपर लाने का प्रयास करने हेतु पूरे देश में प्रत्येक नागरिक को कौशल पूर्ण बनाने हेतु वर्ष 2008–09 में राष्ट्रीय विकास निगम का निर्माण किया।जिसका उद्देष्य निजी एवं सरकारी साझेदारी का एक मॉडल तैयार कर असंगठित क्षेत्रो के कर्मचारियों या नागरिकों को उनकें व्यवसाय के अनुसार कौशल पूर्ण प्रशिक्षण देना है।

राष्ट्रीय कौशल विकास निगम ने 21 विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किया है। जिससे प्रत्येक क्षेत्र (सेक्टर) की क्षमताओं का अत्यधिक विकास कर उत्पादन क्षमता में ज्यादा से ज्यादा वृद्धि हो सके। इसी में शिक्षक –प्रशिक्षण कौशल को भी रखा गया है। जिसका उद्देश्य पठन कौशल, समझना, पढने की आदत का विकास करना आदि रखा गया है वहीं पूरे देश में चल रहा शिक्षक प्रशिक्षण में शिक्षण कौशलो के निर्माण में शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के कौशल सिखये जाते है लेकिन इसमें प्रशिक्षण के दौरान कर्म में कुशलता हेतु किसी भी प्रकार का मन,वचन,कर्म से कुशलता का प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है। जिसका वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता कें अध्याय दो के ष्लाकें 50 में लिखा है

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगःकर्मसु कौशलम् ।। 2/50

कर्म में संलग्न मनुष्य इस जीवन में ही अच्छे तथा बुरे कार्यों से अपने को मुक्त करता है। अतः योग के लिए प्रत्यन करो क्योकि सारा कर्म कौशल यही है।

योग का अर्थ है जोडना, जब भी हम कोई काम करते है तो उस काम मे तन, मन वचन से जुडना आष्यक है यदि मन में अलग विचार और कर्म कर रहे हों तो भी अपने कार्य में कुशलता प्राप्त नहीं होती है।

यही नहीं जब भी हम कोई कार्य प्रारम्भ करने हैं तो उसमें
अनुकूलता और प्रतिकूलता का आना स्वभाविक है। जय–पराजय,

यश–अपयश, लाभ–हानि, में एक समान रह कर ही कर्म में कुशलता प्राप्त किया जा सकता है। जिससे हम स्वयं मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, दार्शनिक रूप से स्वयं ही स्वयं को निर्देशन एवं परामर्श देकर अपने कर्म में श्रेष्ठता हेतु अथक प्रयत्न करते रहते हैं।

शिक्षण कौशल

शिक्षण को एक कला और विज्ञान दोनों की संज्ञा दी जाती है जब शिक्षक कक्षा–कक्ष में उचित समय पर सही ढंग से अपने विषय को प्रभावशाली तरीके से छात्रो तक पहुचाते हैं। उन्ही तरीको को हम शिक्षण कौशल कहते है। इस सम्बन्ध में अलग–अलग परिभाषायें दी हैं।यथा–शिक्षण कौशल वह विशिष्ट अनुदेशन प्रक्रिया है जिसे अध्यापक अपनी कक्षा–शिक्षण में प्रयोग करता है। यह शिक्षण –कम की विभिन्न कियाओं से सम्बन्धित होता है जिन्हे शिक्षक अपने कक्षा अन्तःक्रिया में लगातार उपयोग करता है।

एन0एल0गेज के अनुसार, शिक्षक कौशल शब्द से अर्थ शिक्षण क्रियाओं अथवा उन व्यवहारों के सम्पादन से है जो छात्रों के सीखने के लिये सुगमता प्रदान करने के इरादे से किये जाते है

बी0के0पासी के अनुसार, उपर्यक्त परिभाषाओं का विष्लेषण करने के पश्चात निम्नलिखित शिक्षण कौशलो को समझाने का प्रयास किया गया है–

- उद्दीपन भिन्नता
- विन्यास प्रेरणा

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-7, Issue-3 June- 2020, E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

- समीपता
- छात्रों को साथ लेकर चलने का कौशल
- व्याख्यान कौशल
- संप्रेषण की पूर्णता का कौशल
- नियोजित पुनरावृति

श्रीमद्भगवद्गीता एवं उसमें विद्यमान कौशल

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के युद्ध में योगष्वर कृष्ण द्वार अर्जुन को निमित मानकर सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण हेतु निर्देशन एवं परामर्श दिया गया है। जिसमें मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु के पश्चात तक के बारे में बताया गया है। कि मनुष्य कैसे अपना उद्धार स्वयं कर सके। कर्मो का फल क्या है? उसे अपने समाज के साथ कैसे सामंजस्य स्थापित करना। क्योंकि वर्तमान समय में भौतिक एवं उपभोक्तावादी संस्कृति ने मनुष्य को अनेक मनोरोगों से ग्रसित कर दिया है। हमारा जीवन मानसिक दबावों व तनाव से भरा पडा है यह पीडा, व्यथा, विशाद, क्लेश इत्यादि से आक्रान्त हैं, किसी भी परीक्षा की घडी में हम विरोधी आवेगों के मध्य लडखडा जाते हैं और यह निश्चय नहीं कर पाते कि कौन सा मार्ग अपनायें अथवा क्या करें ? वास्तव में मनुष्य की समस्या यह है कि जब परस्पर विरोधी आवेग हमारे समस्त प्रयत्नों को गतिहीन व अशक्त कर दें और हम अपने आप को पूर्ण अनिश्चित की स्थिति में पाये तो उस अवस्था में संतुलित जीवन कैसे बिताये ? कैसे अपनी बुद्धि व मानसिक शांति को बनाये रखे ? शोक और पीडा को किस प्रकार ष्शांतिपूर्वक सहन कर परीक्षा के क्षणों में सकारात्मक विचारो से अंतःकरण की आवाज के अनुकूल कार्य करें। अर्जुन को भी युद्ध के मैदान में मोह की स्थिति हुई थी। अर्जुन की यह स्थिति आध्यात्मजगत में आत्मा के अंधकार की स्थिति कही जाती है। श्रीकृष्ण अर्जुन की इस स्थिति को देखकर उसे युद्ध करने को निर्देश देते हैं। वे कहते हैं :—

सर्व धर्मान परित्यज्य मामेक शरणं व्रज ।
अहं त्वं पापेभ्यों मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

सभी पूर्वाग्रह को त्यागकर हे पार्थ! तू मेरी शरण में आ। मैं तूझे सभी पापों से मुक्त कर दूंगा। गीता का यह संदेश सार्वभौमिक है।

यह हमारे जीवन में हम सबके ह्रदय में घटित होने वाला युद्ध ही है। आज प्रत्येक व्यक्ति जीवन में द्वन्द्व की स्थिति में है। वस्तुतः श्रीमद्भगवद्गीता मनुश्य के जीवन को एक सकारात्मक दिशा दिखाती हैं और लक्ष्य भेदन में मार्ग प्रसस्त करती है। महात्मा गॉधी जी कहा करते थे ‘‘जब मैं निराशा से घिर जाता हूँ उस समय मुझे कोई आशा की किरण नहीं दिखाई देता तो मैं गीता की ष्शरण मैं जाता हूँ उससे मुझे कोई न कोई ऐसी किरण मिल जाती है जो मेरे जीवन को प्रकाश प्रदान करता है।’’गांधी जी जैसे महान शिक्षाविद,दार्शनिक,चिन्तक ने गीता से प्रेरणा लेकर ब्रिटिश शासन के साथ अहिंसात्म युद्ध कर विजय प्राप्त की । इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुएष्शोधार्थी ने सम्पूर्ण शिक्षको हेतु श्रीमद्भगवद्गीता में विद्यमान निर्देशन एवं परामर्श की आवष्यकता को समझी है।

सम्पूर्ण गीता में कृष्ण और अर्जुन के बीच संवाद की प्रक्रिया 18
अध्याय और 700 ष्लोकों में हैं। जिसमें शोधार्थी ने शिक्षण कौशलों के ष्लोकों को अलग चिन्हित कर वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण कौशल प्रणाली की उपयोगीता हेतु विवेचना हेतु खोज निकालने का प्रयास किया गया है।

श्रीमद्भगवद्गीता में मुख्यतः तीन कौशलो बोलने का कोशल : बोलना बालक—बालिका अपने समाज से सीखता है लेकिन बहुत बार हमारी वाणी से किसी के मन को दुःख पहुंचता है। जीवन में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसलिए गीता में इसे वाणी का तप कहा गया है।

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्। स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाड़मयं तप उच्यते।। 17/15

उद्वेगा उत्पन्न न करने वाला सत्य, प्रिय और हितकारक भाषण, स्वध्याय और अभ्यास करना यह सब वाणी सम्बन्धी तप कहा जाता है। जिस वाणी को सुनकर मनुष्य को व्याकुलतता हो जाती है उसे उद्वेग उत्पन्न करने वाला वाक्य कहा जाता है। भाषण सत्य और प्रिय होना चाहिए। उद्वेग न उत्पन्न करने वाला सत्य प्रिय और हितकर वाक्य वाणी सम्बन्धी तप कहलाता है।

वैचारिक कौशल

हमारे मन में अनेक प्रकार के विचार आते रहते हैं किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व का पूर्ण विकास हमेशा उसके विचारों से होता है। क्योंकि जैसे विचार होगें वैसा हमारा व्यक्तित्व बनेगा। इसलिए गीता में मनास तप की शिक्षा दी गयी है–

मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते।। 17/16

मन की प्रसन्नता, शान्त भाव, भगवत चिन्तन करने का स्वभाव, मन का निग्रह और अन्तःकारण के भावों की भाली भांति पवित्रता –इस प्रकार यह मन तप है।

यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म में कुशलता प्राप्त करना चाहे तो उसे लगातार अपने मन में कर्म की श्रेष्ठता के विचार लाने आवश्यक हैं। तभी सफलता प्राप्त कर सकते है।

कर्म में कुशलता हेतु कौशलों का विकास करना

वर्तमान वैज्ञानिक युग में प्रत्येक व्यवसाय में कौशलपूर्ण होना आवष्यक है श्रीमदभगवद्गीता में वर्णन किया गया है कि यदि कोई व्यक्ति अनाशक्त कर्म ईष्वरापर्ण करते हुए करें तो वह स्वयं कर्म में कुशलता प्राप्त कर सकता गीता में निर्देश दिया गया है–

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते।। 17/14

देवता, ब्राह्मण गुरु और ज्ञानीजनों का पूजन, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा–यह शारीरिक तप कहा गया है।

अध्ययन का महत्व

भारतीय संस्कृति में शिक्षक की भूमिका मात्र शिक्षण कार्य करना नहीं है। बल्कि वह समाज निर्माता के साथ–साथ प्रत्येक मनुष्य को भगवान तक पहुंचने का मार्ग भी दिखाता है।ऐसे में केवल व्यावसायिक कौशल सीखना ही शिक्षक के लिए प्राप्त नहीं होगा। बल्कि उसे सामाजिक, आध्यात्मिक एवं मानवीय कौशलों को भी सीखना नितान्त आवष्यक है।निःसंदेह आज व्यक्ति के विकास में अहम की सबसे ज्यादा भूमिका है । इगो की संतुष्टी के लिए व्यक्ति कई प्रकार के कौशलो को सीख रहा है किन्तु मानवीय गुणों एवं मूल्यों का क्षरण हो रहा है। ऐसे में शिक्षको के शिक्षण कौशल में निमार्ण हेतु श्रीमद्भगवद्गीता का महत्व और ज्याद बढ जाता है।

निष्कर्ष

- प्रत्येक शिक्षक को प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षण संस्थानों तक शिक्षक को अपनी भूमिका मात्र एक व्यावसायिक ही न रह कर सम्पूर्ण समाज निर्माण करना है जिसके लिए उन्हे वैज्ञानिक,दार्शनिक एवं सामाजिक कौशलों का निर्माण करके विपरीत परिस्थिति में भी ईमानदार धैर्यशील,चरित्रवान
- एवं समाज द्वारा निर्धारित रीति रिवाजों का मालन करने वाले कर्तव्यनिष्ठ नागरिक का निर्माण कर सकेगें।
- श्रीमद्भगवद्गीता एवं शिक्षण तकनीकी कौशलो का समन्वीत विकास कर शिक्षक कक्षा–कक्ष में अ श्रीमद्भगवद्गीता में निहित निर्देशन एवं परामर्श का उद्देष्य सार्वभौमिक, आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। बालक–बालिकाओं का विकास हमेशा सकारात्मकता, सहनशीलता, पवित्रता, अभय, उत्साह, उमंग के साथ ज्ञान, भक्ति, कर्म की श्रेष्ठता की भावना शिक्षा के माध्यम से दी जा सकती है। उक्त समस्त तथ्यों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है।
- प्रत्येक शिक्षक को अपने व्यवसायिक कौशल के साथ –साथ सामाजिक कौशल सीखना आवष्यक है जैसे बोलन, लिखना और चिन्तन करने के तरिके को सीख्ना अनिवार्य है। तभी उनमें मानवीय गुणों का पूर्ण विकास हो सकेगा।
- कुशल शिक्षक के लिए अपने विष्य वस्तु की पूर्ण जानकारी के साथ –साथ अपने आचरण मन,वचन,कर्म से छात्रों में समाज,संस्कृति और आधुमिक एवं प्राचीन मूल्यों के प्रति जागरूक कर उनमें कुशल नागरिक निर्माण हेतु श्रीमद्भगवद्गीता में विद्यमान प्रेरक प्रशंगो से प्रेरित करेगें।

अध्ययन के परिणाम एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने पाया कि भारत जैसे सांस्कृतिक संपन्न देश में शिक्षक मात्र जानकारी देने का व्यवसायी नहीं है। बल्कि

यहां शिक्षक की भूमिका भगवान से भी उपर है अतः शिक्षक को व्यावसायिक कौशल के साथ दार्शनिक एवं सामाजिक कौशल सीखने अनिवार्य है जिससे वे समाज में अपनी खोयी गरिमा को पुनः स्थापित कर सके। इसके लिए सम्पूर्ण देश के शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानो में श्रीमद्भगवद्गीता की उपयोगिता अनिवार्य किया जाय और प्रशिक्षण के दौर उन्हे मानीवय कौशल प्रशिक्षण दिया जाय।

शैक्षिक निहितार्थः

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शिक्षण कौशलो का प्रयोग शिक्षण प्रणाली में उपयोगिता के सिद्धान्तों एवं आदर्शों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पालन किया जायेगा तो समाज में नैतिकता, समानता एवं उच्च आदर्शो की स्थापना करने में सहायता मिलेगी। गीता में विद्यमान निर्देशन एवं परामर्श को व्यक्ति के पूर्ण विकास हेतु व्यवहारिक रूप दिया जायेगा तो सम्पूर्ण समाज में प्रत्येक व्यक्ति एक आदर्श एवं उत्तम नागरिक बनेगा। जिससे सम्पूर्ण विष्व में उत्पन्न हो रही सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, एवं मनोवैज्ञानिक समस्यायें स्वतः ही हल हो जायेगीं। फिर सम्पूर्ण मानव समाज में समतामूलक होकर प्रत्येक व्यक्ति मानव कल्याण हेतु भौतिक एवं आध्यात्मिक

रूप से रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्य कर प्रगतीशिल समाज का निर्माण होगा । जिससे सम्पूर्ण विष्व में उत्पन्न हो रही सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, एवं मनोवैज्ञानिक समस्यायें स्वतः ही हल हो जायेगीं। फिर सम्पूर्ण मानव समाज में समतामूलक होकर प्रत्येक व्यक्ति मानव कल्याण हेतु भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्य कर प्रगतीशिल समाज का निर्माण होगा ।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य, रजनीश : "गीता दर्शन" प्रकाशक– डायमण्ड बुक डिपो दिल्ली।
2. "हिन्दुस्तान" –10 जून 2014 ''वर्तमान में जीना सीखाता है ध्यान''
3. "हिन्दुस्तान" 13 जून 2014 ''हाईपरटेंशन न होन दें बेकाबू''।
4. शर्मा, आर0ए0 एवं चतुर्वेदी, शिखा : "निर्देशन एवं परामर्श के मूल तत्व" –प्रकाशक आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ 250001।
5. दबे,एस0एम0एवं शर्मा दिनेशः''समाजशास्त्र एक परिचय''–एन0सी0ई0आर टी0नई दिल्ली ।
6. मैकाईवर, आर0एम0एण्ड पेज,चार्ल्स एच0ः''समाज का परिचायत्मक विश्लेषण'' न्यू दिल्ली मैक्मिलनइण्डिया लि0।
7. शर्मा, आर0 ए0 एवं चतुर्वेदी शिखा : "निर्देशन एवं परामर्श के
8. मूल तत्व" –प्रकाशक आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ 250001।
9. शर्मा, आर0ए0 : शिक्षा तकनीकी –प्रकाशक इन्टरनेशल पब्लिकेशिंग हाउस मेरठ–250001
10. एनसीईआरटी 2005 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
11. भारत सरकार की कौशल विकास की मार्गदर्शिक
12. डॉ0 प्रेमप्रकाश पुरोहित, शिक्षण कौशल विकास में श्रीमद्भगवद्गीता की उपयोगिता, आई0जे0एस0आर0 2017 : 3(3) : 378–381